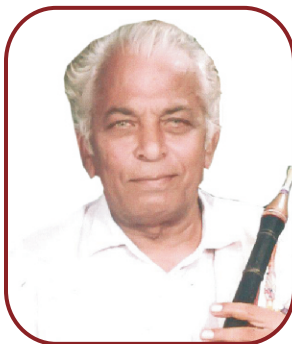


Padma Shri



SHRI GOSAVEEDU SHAIK HASSAN SAHIEB (POSTHUMOUS)

Shri Gosaveedu Shaik Hassan Sahieb was the first Asthana Nadswara Vidhwan of Sree Seeta Ramchandra Swamy Devasthanam, Bhadrachalam. He performed Nadswaram in many famous temples in Andhra Pradesh and Telangana. He is also a carnatic vocalist and freedom fighter.

2. Born on 1st January, 1928 at Gosaveedu Krishna District, Andhra Pradesh. At the age of 8 years, Shri Hassan started playing Nadaswaram. He learned Nadswaram from the several learned Gurus. He learned vocal from Shri Mangalampalli Pattabhiramayya. He performed Nadaswaram in various Temples viz. Tirupathi Tirumala Devasthanam, Kanakadurga Temple Vijayawada, Lakshmi Narasimha Swamy Temple yadagiri Gutta, Venkateshwara Swamy Temple Jamalapuram etc.

3. Shri Hassan was the first Asthana Nadsawara Vidhwan of Badhrachala Sree Seeta Ramchandra Swamy Devasthanam. He worked as the Asthana Vidhwan from 1950 to 1996. He was Radio and TV artist. He worked as judge in selection of various Nadswaram employees in to various temples. He have given teaching to hundreds of students, many of his students got government employment in various temples, many of his students awarded by Doctorate. He played ragas very well through Nadaswaram, and he was capable in singing many great ragas. He was expert in playing Ragas.

4. Shri Hassan contributed in the field of music more than 80 years through Nadaswaram and Vocal. His main duty was to wake up God Ram with his music and to make Ram to sleep with his music. He got special Blessing of God Ram. He was also a freedom fighter participated in Freedom movement from (1940-1947).

5. Shri Hassan was awarded by various awards & honors including Tayagaraj Pruskar in 2007. Shri Hassan was also awarded twice by Chief Ministers of Andhra Pradesh at Ravindra Bharati in 1991 & 1994 for his contribution in the field of art and culture .

6. Shri Hassan passed away on 23rd June, 2021.

पद्म श्री



श्री गोसावीदु शेख हसन साहेब (मरणोपरांत)

श्री गोसावीदु शेख हसन साहेब श्री सीता रामचंद्र स्वामी देवस्थानम, भद्राचलम के पहले अस्थाना नादस्वर विद्वान थे। उन्होंने आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के कई प्रसिद्ध मंदिरों में नादस्वरम का प्रदर्शन किया। वे एक कर्नाटक गायक और स्वतंत्रता सेनानी भी थे।

2. 1 जनवरी, 1928 को आंध्र प्रदेश के गोसावीदु कृष्णा जिले में जन्मे, श्री हसन ने 8 साल की उम्र में नादस्वरम बजाना शुरू कर दिया था। उन्होंने कई विद्वान गुरुओं से नादस्वरम सीखा। उन्होंने श्री मंगलमपल्ली पट्टाभिरामय्या से गायन सीखा। उन्होंने विभिन्न मंदिरों जैसे तिरुपति तिरुमाला देवस्थानम, कनकदुर्गा मंदिर विजयवाड़ा, लक्ष्मी नरसिम्हा स्वामी मंदिर यादगिरि गुट्टा, वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर जमालपुराण आदि में नादस्वरम का प्रदर्शन किया।

3. श्री हसन बधराचल श्री सीता रामचंद्र स्वामी देवस्थानम के पहले अस्थाना नादस्वर विद्वान थे। उन्होंने 1950 से 1996 तक अस्थाना विद्वान के रूप में काम किया। वे रेडियो और टीवी कलाकार थे। उन्होंने विभिन्न मंदिरों में विभिन्न नादस्वरम कर्मचारियों के चयन में निर्णायक के रूप में काम किया। उन्होंने सैकड़ों छात्रों को पढ़ाया है, उनके कई छात्रों को विभिन्न मंदिरों में सरकारी नौकरी मिली है, उनके कई छात्रों को डॉक्टरेट से सम्मानित किया गया है। उन्होंने नादस्वरम के माध्यम से बहुत अच्छे रागों का उच्चारण किया, तथा वे कई महान रागों को गाने में सक्षम थे। वे रागों को बजाने में माहिर थे।

4. श्री हसन ने नादस्वरम और गायन (वोकल) के माध्यम से 80 से अधिक वर्षों से संगीत के क्षेत्र में योगदान दिया है। उनका मुख्य कर्तव्य भगवान राम को अपने संगीत से जगाना और अपने संगीत से निद्रा में सुला देना था। उन्हें भगवान राम का विशेष आशीर्वाद प्राप्त हुआ। वे एक स्वतंत्रता सेनानी भी थे जिन्होंने (1940 से 1947) तक स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया था।

5. श्री हसन को 2007 में त्यागराज पुरस्कार सहित विभिन्न पुरस्कारों और सम्मानों से सम्मानित किया गया था। श्री हसन को कला और संस्कृति के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए वर्ष 1991 और 1994 में रवींद्र भारती में आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्रियों द्वारा दो बार सम्मानित भी किया गया था।

6. श्री हसन का 23 जून, 2021 को देहावसान हो गया।